परिचय

चन्द्रकान्त जोशी : व्यक्तित्व और कृतित्व

● सत्यपाल शास्त्री

जम्मू-कश्मीर के जाने-माने कवियों में चन्द्रकान्त जोशी अन्यतम हैं। वह पुरानी और नवीन पीढ़ी के कवियों में समान-रूप से लोकप्रिय हैं। इनकी शृङ्गार-रस प्रधान रचनाओं में आज भी वही लहलहाते यौवन का जादुई उन्माद है जो आज से पच्चीस वर्ष पहले था और उनकी राष्ट्रवादी कविता में वही उद्दाम यौवन का जोश है जो एक युवा कवि की कविता में होता है और उसके साथ ही उनकी प्रगतिवादी कविता में सामाजिक विषमताओं के प्रति वही तीव्र आक्रोश, क्रान्ति और करुणा का स्वर तथा क्रोध भरी हुंकार है जो एक क्रान्ति दृष्टा कवि की कविता में होती है तथा उनकी छायावादी कविता में वही मधुर भाव व्यञ्जना, पदलालित्य, प्रतीकात्मकता तथा अप्रस्तुत विधान है जो एक विचारशील कवि की कविता में होता है।

कवि जोशी का जन्म जम्मू के एक मध्यवित्तीय परिवार में २८-२-१९२८ को हुआ था। इनके पिता जी स्कूल-अध्यापक थे। स्वाभाविक था कि जोशी के कवि हृदय पर बचपन से ही घरेलु परिस्थितियों का प्रभाव पड़ता। इन्होंने हिन्दी तथा संस्कृत में एम० ए०, साहित्यरत्न, प्रभाकर तथा बी० एड० तक शिक्षा प्राप्त की। इन्होंने बी० ए० तक जम्मू के प्रिन्स ऑफ वेल्स कालेज (अब गान्धी मेमोरियल साईंस कालेज) में शिक्षा प्राप्त की। बी० ए० पास करने के बाद यह कलकत्ता जाकर सहायक सुरक्षा अधिकारी (Assistant security officer) के रूप में विलियम आर्डिनेन्स डिपो में काम करते रहे। १९५० ई० में अपने पिता के आकस्मिक निधन के कारण इन्होंने वहां से नौकरी छोड़ दी और जम्मू लौट आए।

१९५० ई० में ओ० एफ० डी० में गेट अधिकारी नियुक्त हो गए। १९५७ ई० तक इसी विभाग में काम करते रहे। इसी बीच इन्होंने दोनों एम० ए० की परीक्षाएं उत्तीर्ण कर लीं। उन्हीं दिनों इन्होंने इस नौकरी से त्याग पत्र देकर शिक्षा विभाग में आने का निर्णय कर लिया, क्योंकि यह नौकरी इनकी साहित्यिक अभिरुचि के अनुकूल नहीं थी। परिणामतः इनकी अध्यापक के रूप में पहली नियुक्ति हाई स्कूल दुमाना में सन् १९५७ में हुई। इसके बाद इन्होंने १९६४ ई० तक क्रमशः हाई स्कूल अखनूर, ज्योड़ियां तथा रणवीर हायर सैकेण्डरी स्कूल, जम्मू में अध्यापन कार्य किया। १९६४ ई० में यह राजकीय महाविद्यालय भद्रवाह में प्राध्यापक नियुक्त हुए। वहां से दो महीने के बाद इनका स्थानांतरण राजकीय कालेज अनन्तनाग हो गया और वहां से १९७२ में कठुआ भेज दिए गए।

जोशी जी को १९४३ ई० से ही कविता लिखने का शौक है। उस समय यह इण्टर-मीडियेट में पढ़ा करते थे।

उन्हीं दिनों जब प्रो० पी० एन० पुष्प की अध्यक्षता में प्रिन्स ऑफ वेल्स कालेज में हिन्दी साहित्य परिषद् की स्थापना हुई तो जोशी उसकी गोष्ठियों में सक्रिय भाग लेने लगे और अपनी नित्य नई कविताएं भी सुनाने लगे। एक बार इनके कुछ साथियों ने ईर्ष्यावश इन पर कटाक्ष किया कि जोशी जी मौलिक कविता लिखने के स्थान पर दूसरों की नक़ल करते हैं। इससे जोशी का कवि झकझोर उठा। फलस्वरूप इन्होंने एक कविता लिखी जिसमें कक्षा की सभी छात्राओं के नाम संजोए गए। कविता की प्रारम्भिक पंक्तियां इस प्रकार हैं :—

"दीप, दीप कुलदीप जलाकार,
कुलदीपों को सुधा पिलाकर,
बैठे थे जन अपने घर में,
कमला पूजन था घर घर में।"

इन पंक्तियों में रेखाङ्कित नाम लड़कियों के हैं।

भले ही जोशी जी की यह कविता उच्च कोटि की नहीं है, परन्तु इससे कालेज में जोशी जी की लोकप्रियता अवश्य बढ़ गई। इसके बाद इन्होंने कालेज की हिन्दी परिषद् की साहित्यिक गोष्ठियों में यह कविता कई बार पढ़ी। इन गोष्ठियों में छात्राएं भी हुआ करती थीं, जो कविता सुनकर मुस्कराने के साथ भीतर ही भीतर कुढ़ती भी थीं। अन्ततः इस बारे में कालेज के प्रिन्सिपल के पास शिकायत भी पहुंची, परन्तु कुछ अध्यापकों ने बीच-बचाव करके मामला रफा-दफा करवा दिया था।

जोशी जी की छात्रावस्था की कविताओं में राष्ट्रीयता और रोमान्स अधिक है। उन्हीं दिनों बच्चन जी का काव्य 'बंगाल का अकाल' प्रकाशित हुआ था। उसे पढ़कर जोशी जी के मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। परिणामतः इन्होंने भी इसी विषय पर एक कविता लिख डाली, जिसकी प्रारम्भिक पंक्तियां इस प्रकार हैं :—

"भारत भिखमङ्गों की दुनिया।"

यह कविता कालेज की पत्रिका 'तवी' तथा दैनिक 'विश्व-बन्धु' (लाहौर से प्रकाशित होने वाला) के रविवासरीय अङ्क में प्रकाशित हुई थी। इसके अतिरिक्त कवि जोशी पर निराला, माखन लाल चतुर्वेदी, मैथिली शरण गुप्त तथा उर्दू के कवि मिर्जा ग़ालिब, इकबाल आदि की रचनाओं का समय-समय पर प्रभाव पड़ता गया।

सन् १९४७ ई० में जब सारे देश में प्रान्तीय भाषाओं के विकास के लिए आन्दोलन चले तो जम्मू में भी इसकी लहर पहुंची। परिणामतः यहां 'हिन्दी साहित्य मण्डल' की स्थापना हुई।

श्री बंसीलाल सूरी, रामनाथ शास्त्री, शांता भारती, शकुन्तला सेठ आदि इसके मुख्य कार्यकर्ता थे। इस संस्था के माध्यम से जम्मू में हिन्दी के प्रचार के लिए स्वस्थ वातावरण तैयार हुआ। परन्तु कुछ समयोपरान्त जम्मू में डोगरी संस्था की स्थापना हो जाने से हिन्दी के प्रचार को इसलिए कुछ धक्का लगा कि मंडल के बहुत से सक्रिय कार्यकर्ता डोगरी संस्था में सम्मिलित हो गए। हां जोशी जी, बंसीलाल सूरी तथा शान्ता भारती आदि हिन्दी के प्रचार-कार्य में यथावत् लगे रहे। उन्हीं दिनों कुमारी शान्ता जी ने हिन्दी पत्रिका **'भारती'** का प्रकाशन आरम्भ किया था। जब जोशी जी 'हिन्दी साहित्य मण्डल' के प्रधान मनोनीत हुए तो इन्होंने हिन्दी के प्रचार कार्य को और अधिक गतिशीलता दी। उन दिनों कवि जोशी ने एक क्रान्तिकारी कविता लिखी थी जिसकी कुछ पंक्तियां इस प्रकार हैं :—

"तुम गीत बनो मैं गाऊँ
मैं रोकर मन बहला लेता
बोलो मां, कब भूख मिटेगी
मधुपान नहीं विषपान करो।"

कवि की उन दिनों की कविताएं भारती, उषा (जो शकुन्तला सेठ के सम्पादकत्व में निकलती थी) विश्वबन्धु (लाहौर), चान्द (उर्दू), रणवीर (उर्दू) आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित होती थीं। जोशी जी का पहला लेख 'गीता में साम्यवाद' रणवीर (हिन्दी) के विशेषाङ्क में छपा था, जिसे सभी ने सराहा था। बंगाल के अकाल पर भी इनका एक लेख छपा था। जोशी जी की कुछ कविताएं जम्मू से श्री कुन्दन लाल जी के सम्पादन में निकलने वाले **'रत्न'** तथा विजय सुमन के सम्पादन में निकलने वाले 'गुलाब' में भी छपा करती थीं।

जोशी जी की कविताओं में मुख्य रूप से ये प्रवृत्तियां हैं : राष्ट्रवाद, प्रगतिवाद, छायावाद, रोमांस। यह मुख्य रूप से छन्दोबद्ध रचना ही करते हैं जिनमें गीत, कविता, दोहे और गज़लें हैं। इनकी १९५९ ई० तक लिखी कविताओं का एक संग्रह उर्दू लिपि में छप चुका है। शेष लगभग ४०० कविताएं अभी तक किसी संग्रह का रूप नहीं ले सकी हैं परन्तु इनमें से अधिकांश यत्र-तत्र कवि गोष्ठियों में पढ़ी गई हैं और स्थानीय तथा देश की अन्य पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं।

जोशी जी की रोमांस-प्रधान कविताओं में सहज अभिव्यक्ति, स्वच्छन्द-प्रवाह, शालीनता, स्वतः प्रवाह तथा आत्मानुभूति का स्वर है। जैसे :–

एक घटना घटी प्यार के नाम की
हृदय ने कहा मोल मेरा क्यों ?

●

सजल नयन बोले हमें दोष मत दो,
फूल के बाण से शूल घायल हुआ,
चाल ऐसी चली राह में काम की।

एक गज़ल का अंश भी द्रष्टव्य है :–

आंखें डूबें मन खो जाए,
सुध बिसरे तन डोले है।
जाने किस जंगल का पंछी,
छत पर मेरे बोले है।

इनकी राष्ट्रवादी कविताओं में देश के सुन्दर भविष्य के लिए सुनहरे स्वप्न हैं और अपने महान् अतीत के प्रति विशेष आदर की अभिव्यक्ति है :–

"आ करें निर्माण, नूतन भव्य भारत के भवन का।
प्राण वर्षों से पवन आज़ाद बहता है यहां पर।
प्राण वर्षों से मनुज मधुगीत गाता है यहां पर।"

इनकी प्रगतिवादी कविताओं में समाज के पिछड़े वर्ग के प्रति गहरी समवेदना, सहानुभूति और विशेष कसक है तथा उनकी समस्याओं के प्रति कवि के हृदय में एक विशेष प्रकार का आक्रोश तथा जागरूकता है, परन्तु उनके समाधान के लिए कवि के पास विशेष कुछ नहीं है, हां निराशा का स्वर अवश्य है। इन तथ्यों की पुष्टि नीचे दिए उदाहरणों से हो जाएगी :–

आ साथी, मैं तुझे बताऊं
मजदूरों का मेला।

●

"पूज तू पत्थर का भगवान,
मुझे तो प्यारा है इन्सान।
बनाकर मन्दिर एक विशाल,
जपा करते हैं मन के राम।"

कवि की छायावादी कविताओं में वही सहज तरलता, प्रतीकात्मकता तथा अप्रस्तुत विधान है जो हिन्दी के गण्य-मान्य कविओं की कविताओं में पाया जाता है। इनकी नीचे लिखी कविता पर डॉ० रामकुमार वर्मा की कविता 'ये तारे गजरों वाले' का प्रभाव परिलक्षित होता है :–

"एक तारा टूटता है,
दूसरा है जगमगाता ।

हर निशा को नीलनभ में,
तारकों का गान होता ।"

इनकी अन्य छायावादी कविताओं में वैसा ही निराशा का स्वर है जैसा उनकी प्रगतिवादी कविताओं में देखा जाता है :-

"गीत का अवसान होता ।
कौन जाने फिर निशा को,
कौन मिलता कौन गाता?"

इस कवितांश में निशा-नायिका को अपने नायक (चांद) के प्रति आकर्षण तो है परन्तु कवि की ओर से उसके प्रति अनभिज्ञता प्रगट करना कवि की निराशावादिता का द्योतक है।

स्वभाव से मधुर तथा रोमानी जोशी शतरञ्ज के माने हुए खिलाड़ी हैं। कभी-कभी इनके चेहरे पर निराशा की काली छाया स्पष्ट प्रतीत होने लगती है, जो गाहे-बगाहे इनकी कविता को भी कुण्ठित कर देती है। क्योंकि जोशी जी को बचपन से ही जीवन की उलझी समस्याओं से दो-चार होना पड़ा है, इसीलिए उनकी कविता में कहीं-कहीं निराशावाद आ गया है तो भी हिन्दी जगत् को तो कवि जोशी से बड़ी आशाएं हैं।